17

भटक रहे पवित्र लोगों को कैसे सम्भालें (5:19, 20)

एक से अधिक साल पहले की बात है, मेरी पत्नी मालिया और मेरे पास आरमिंग्टन चर्च के लिए कुछ महत्वपूर्ण सेवा कार्य थे। किए जाने वाले आवश्यक कार्य को पूरा करने के लिए हमें राहत देने के लिए, मण्डली की स्त्रियों में से एक डॉरिस लूइस स्वेच्छा से हमारे बच्चों को सम्भालने लगी। जब हम लूइस के घर से बच्चों को लेने गए तो तुरन्त हमें उनके घर से लगाव हो गया। उन्होंने 150 वर्ष से पुराना घर खरीदा था और इसकी बहाली और मरम्मत के काम में लगे हुए थे। हमें घर में से चलते हुए देखकर आनन्द आया कि उन्होंने क्या-क्या कर लिया है और उनसे अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में सुना। डॉरिस की बातें सुनकर हम बता सकते थे कि मरम्मत का काम सचमुच प्रेम का परिश्रम है। मेरा अनुमान होगा कि यह परिश्रम और प्रेम दोनों का ही काम है। किसी भी मरम्मत कार्य में ऐसा ही लगेगा।

याकूब की पत्री का अपना अध्ययन समाप्त करते हुए, हम देखते हैं कि याकूब भटके हुए को वापस लाने की टिप्पणी से समाप्त करता है। याकूब बातें कर रहा था कि हमारे प्रतिदिन के जीवन में विश्वास कैसे अन्तर ला सकता है (परीक्षाओं के बारे में सच्चाई से हमें बताकर, जीभ का इस्तेमाल, परमेश्वर की इच्छा को सुनकर और पूरा करके, अपने पड़ोसी से प्रेम करके, आदि)। अपने पत्र के अन्त में वह हमें दिखाता कि वह केवल शैक्षणिक विश्लेषण नहीं कर रहा था, बल्कि कार्य के लिए बुलाहट दे रहा था। सुसमाचार के सत्य से भटक जाने वालों और जिम्मेदारियां लेने वालों को उचित व्यावहारिक में वापस लाया जाना आवश्यक है। बाइबल स्पष्ट सिखाती है कि मसीही व्यक्ति भटक सकता है। वैसे ही जैसे कोई मसीही बनता है। मसीही होने का अर्थ यह नहीं है कि शैतान उसे छोड़ देता है। हर हालत में वह आपको नष्ट करने के लिए हर सम्भव कोशिश करता है (1 पतरस 5:8)। अपने विश्वास का इनकार करके सुसमाचार के अनुग्रह से दूर चले जाने वालों की राह एक भयंकर भविष्य देखता है (2 पतरस 2:20, 21; इब्रानियों 10:26, 27)।

इस विशेष समस्या पर इतना ध्यान नहीं दिया गया है। यह हो सकता है कि हमारे पुलपिटों से चेतावनियों वाली घण्टियां बजनी चाहिए पर हर नये मसीही को विश्वास में समझाया और जताया जाना चाहिए। जो लोग कमज़ोर, सांसारिक या भटक गए हैं उनके लिए लगातार प्रार्थनाएं ही नहीं बल्कि भटक जाने वाले भाइयों तक पहुंचने और उन्हें वापस लाने के लिए हर प्रयास ही किया जाना आवश्यक है।

लूइस के घर की बहाली की तरह, किसी भाई को बहाल करना प्रेम का परिश्रम होगा। इसमें काफ़ी परिश्रम *और* प्रेम दोनों की आवश्यकता होगी। आइए याकूब की अन्तिम दो आयतों को पढ़कर देखते हैं कि वह क्या कहता है कि हमें भटक रहे पवित्र लोगों के साथ क्या करना चाहिए।

एक सम्भावना: ''यदि तुम में कोई ...'' (5:19)

सच्चाई एक जीवित चीज़ है। जब यह हमारे मनों को पकड़ लेती है तो यह हमारे जीवनों को बदल देती है। याकूब कह रहा है कि सच्चाई का हमारा ज्ञान केवल तथ्यों को रटने से कहीं अधिक होना आवश्यक है। यानी यह जीने के हमारे ढंग से दिखाई देना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप विश्वास करते हैं, तो परीक्षा आने पर आप संदेह नहीं करेंगे, आप उनकी सम्भाल करेंगे जिन्हें आवश्यकता है, और सताव के समयों में आप धीरजवंत होंगे। आप उन लोगों को पहचानने में सक्षम होंगे जो ''घूम रहे'' या ''भटक रहे'' हैं क्योंकि उनके जीवन उस सच्चाई से मेल नहीं खाएंगे जिसे वे कहते हैं कि वे मानते हैं।

याकूब ने एक दिलचस्प शब्द ''भटक'' के साथ परमेश्वर से मसीही व्यक्ति के दूर होने की प्रकृति को दिखाया है। उस शब्द का अर्थ है ''गलती में गिरना'' या ''गुमराह होना।'' मत्ती ने इस शब्द का इस्तेमाल अपने चरवाहे और झुंड से भटक जाने वाली भेड़ के वर्णन के लिए किया (मत्ती 18:12)। जो तस्वीर याकूब दिखा रहा है वह किसी मसीही द्वारा परमेश्वर द्वारा ठहराए सच्चाई के मार्ग से अपना मार्ग अपनाने की बात है।

परमेश्वर के बालक के भटक जाने की सम्भावना को व्यावहारिक बनाने के लिए पवित्र शास्त्र के अध्ययन में दूर जाने की आवश्यकता नहीं। विश्वास का एक महान पुरुष अब्राहम मिसरियों से झूठ बोलकर कि सारा उसकी बहन है अपनी वचनबद्धता से फिर गया था (उत्पत्ति 12:9)। परमेश्वर के मन के अनुसारी व्यक्ति दाऊद एक पत्नी के लिए एक ही पति के परमेश्वर के आदर्श से दूर हो गया और उसने किसी दूसरे की पत्नी के साथ व्यभिचार किया (2 शमुएल 11:2-5)। प्रभु के निकटतम शिष्यों में से एक पतरस ने एक कठिन क्षण पर प्रभु का इनकार किया था (मत्ती 26:69-74)।

ज़िम्मेदारी: ''जो फेर लाए ...'' (5:20)

लगेगा कि हम में से अधिकतर लोग मसीहियत को ''अकेला पर्यटक'' जैसी कोई चीज़ मानते हैं, जैसे हमें शैतान के साथ अपने संघर्ष में किसी दूसरे की आवश्यकता न हो। सच्चाई से बढ़कर कुछ नहीं कहा जा सकता। हमें एक दूसरे की आवश्यकता है; मैं कुछ नहीं हूं। आप कुछ नहीं हैं। हम तो हम हैं! एक दूसरे के प्रति हमारी एक आत्मिक जिम्मेदारी है, यह और अन्य वचन पाठ (गलातियों 6:1; इब्रानियों 10:24) इसी ज़िम्मेदारी की ओर ध्यान दिलाते हैं।

हमें अपनी मसीहियत को छोड़ लगभग हर दूसरी बात पर एक दूसरे से बात करने में कोई दिक्कत नहीं होती। हम फुटबाल, शिकार खेलने, मछलियां पकड़ने, कारों और पशुओं की बात कर सकते हैं पर एक दूसरे के साथ उन चीज़ों जो सचमुच महत्वपूर्ण हैं बात करने के लिए हम में साहस नहीं है। कुछ कारण हैं कि यह सच क्यों है। पहले तो हमें अपनी ही मसीहियत के साथ इतना संघर्ष करना पड़ रहा हो सकता है कि हमें अपनी आत्मिकता की किसी दूसरे से बात करने में दिक्कत आती है। या हम डरते हैं कि उसे लगेगा कि हम उससे बेहतर हैं। सम्भवतया अधिकतर हमें ऐसा लगता है जैसे यह हमारा काम न हो। परिणाम यह होता है कि भाई और बहनें ''सच्चाई से भटक जाते'' हैं और हम उनके साथ उनके आत्मिक जीवनों तथा स्थिति की बात कभी नहीं कर पाते।

''उसे वापस लाने'' और उसे ''उसके मार्ग की बुराई से'' मोड़ने की जिम्मेदारी हमारी ही है। यह कठिन है क्योंकि किसी भटके हुए को वापस लाना चालाकी से या उसे ''खींचकर'' नहीं हो सकता। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर भी व्यक्ति को उसकी पसन्द के खिलाफ़ चुनने के लिए दबाव नहीं डालता। याकूब पूरा नहीं बताता कि ऐसा काम कैसे करना है, पर वह हम से इसे करने की उम्मीद करता है। निर्देश के कठोर शब्द पौलुस की ओर से मिलते हैं: ''... नम्रता के साथ ऐसे को संभालो; ...'' (गलातियों 6:1)। भीतर आने के लिए मूर्खों के लिए कोई समय नहीं है। क्रोध करने या उतावली करने का समय नहीं है। ''भटका हुआ'' लग सकता है कि अवज्ञाकारी या विद्रोही है, पर सम्भवतया अन्दर से वह घायल या टूटा हुआ है।

ऐसे लोगों के साथ जिस प्रकार यीशु ने व्यवहार किया यदि हमें कभी उनके साथ व्यवहार करने की आवश्यकता पड़े, तो अभी है। हमें सुसमाचार की आवश्यकता है और हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि पौलुस ने पतरस के साथ कैसे व्यवहार किया: प्रेम पूर्वक, कोमलतापूर्वक और चुनौती भरे ढंग से। हमें भी भटके हुए को वैसे ही जवाब देने की आवश्यकता है: प्रेम पूर्वक, कोमलता से और यीशु के प्रेम के साथ उन्हें चुनौती देते हुए। आम तौर पर हम कठोर और न्याय करने वाले बन सकते हैं, पर यीशु का मन ऐसी नहीं है।

क्षमता: ''... एक प्राण को बचाएगा'' (5:20)

भटके हुए के प्राण मृत्यु से बचा लिया जाएगा। नये नियम में, ''मृत्यु'' शब्द का इस्तेमाल उसके विवरण के लिए किया गया है जो पाप जीवन के साथ करता है। पाप प्रभु के साथ संगति को काट देता है। परमेश्वर का भटका हुआ बालक जो अपने पापों में बना रहता है मृत्युदण्ड के वश है (रोमियों 6:23; इब्रानियों 10:26, 27)। बहाल होने के लिए व्यक्ति के लिए परमेश्वर से दूरी से बचाया जाना आवश्यक है।

भटके हुए मसीही के लिए डरने की आवश्यकता नहीं है: परमेश्वर अपनी संगति में उसका स्वागत करेगा और उसके पापों को क्षमा करेगा। ऐसी क्षमा से दो आशिषें मिलती हैं। पहली कई पाप ढांपे जाएंगे। दूसरा इस एक को मन फिराव की ओर लाने (या भटके हुए को वापस लाने) से उद्धार या क्षमा पक्की होगी, और उसे वापस लाने के लिए प्रयास करने वाले के लिए पुरस्कार। (देखें यहेजकेल 33:9.)

सारांश

डॉन और डॉरिस लूइस के घर और उस 150 वर्ष पुराने मकान में क्या अन्तर है, जिसे किसी ने सम्भाला नहीं था? बहुत सा काम और बहुत सा प्रेम। यह घर बदल गया है।

उस मसीही में जो सच्चाई से भटक गया है और उस पर दोबारा दावा नहीं किया गया है और उस मसीही में जिसे कोई वापस लेकर आया है यही अन्तर है। एक बदलाव हुआ है क्योंकि किसी ने एक प्राण की चिन्ता की है!